M.A HINDI SEM-III

Year	Subject	Paper	Title of Paper	Hrs/wee	Credit	Examination Scheme				Total Marks
						Max. Marks (Theory)	Max. Marks) (Internal)	Total Marks	Min. Passing Marks	
Sem III	Core	MHI3T01	हिंदी भाषा	4	4	80	20	100	40	100
	Core	MHI3T02	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	4	4	80	20	100	40	100
	Core Elective	MHI3T03	आधुनिक काव्य (B)	4	4	80	20	100	40	100
	Open Elective	MHI3T04	तुलनात्मक साहित्य (B)	4	4	80	20	100	40	100
	Total			16	16					400

M.A HINDI SEM IV

Year	Subject	Paper	Title of Paper	Hrs/wee	Credit	Examination Scheme				Total Marks
						Max. Marks (Theory)	Max. Marks) (Internal)	Total Marks	Min. Passing Marks	
Sem IV	Core	MHI4T01	भाषा विज्ञान	4	4	80	20	100	40	100
	Core	MHI4T02	हिंदी आलोचना	4	4	80	20	100	40	100
	Core Elective	MHI4T03(B)	जनसंचार और हिंदी पत्रकारिता	4	4	80	20	100	40	100
	Open Elective	MHI4T04(B)	साहित्य और सिनेमा	4	4	80	20	100	40	100
	Total			16	16					400

तृतीय सेमेस्टर

MHI3T01 हिंदी भाषा

उद्देश्य

- हिन्दी साहित्य के विद्यार्थी को हिन्दी भाषा के उद्भव और विकास के साथ उसकी प्रमुख बोलियों से परिचित कराना।
- हिन्दी साहित्य की समझ तथा भाषा की संरचना और प्रकृति की समझ विकसित कराना।
- भाषा के विविध रूपों के साथ उसके व्याकरण का परिचय कराना।

इकाई – 1

हिंदी भाषा – अर्थ : परिभाषा और अभिलक्षण

हिंदी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का वर्गीकरण

इकाई – 2

हिंदी भाषा और उसकी प्रमुख बोलियाँ

पश्चिमी हिंदी,पूर्वी हिंदी, राजस्थानी, बिहारी, पहाड़ी भाषाएँ एवं उनकी बोलियाँ

इकाई – 3

हिंदी शब्द रचना – उपसर्ग, प्रत्यय, समास

रूप रचना – लिंग, वचन और कारक

संज्ञा, सर्वनाम विशेषण और क्रिया

वाक्य रचना – पदक्रम और अन्विति

इकाई – 4

हिंदी भाषा के विविध रूप – मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, राज भाषा, बोली भाषा, संपर्क भाषा

देवनागरी लिपि का विकास

देवनागरी लिपि की विशेषताएँ एवं मानकीकरण

शैक्षिक परिणाम :-

• विद्यार्थियों को विषय की समग्र जानकारी होगी जिससे वे विषय के विविध आयामों से परिचित होंगे।
• उनमें भाषा-दक्षता का विकास होगा, साथ ही भाषा तकनीक का बोध होगा।
• उनमें भाषिक परंपरा के बोध से विषय को तार्किक ढंग से विश्लेषित करने की क्षमता विकसित होगी।
• उन्हें रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा उनमें अन्वेषण वृत्ति का विकास होगा।

- उनमें सामुदायिक दृष्टिकोण और नेतृत्व क्षमता विकसित होगी।

संदर्भ ग्रंथ –

1. हिंदी भाषा – भोलानाथ तिवारी
2. हिंदी भाषा की संरचना – भोलानाथ तिवारी
3. हिंदी भाषा का विकास – धीरेंद्र वर्मा
4. हिंदी भाषा का उद्भव और विकास – उदय नारायण तिवारी
5. हिंदी भाषा का उद्भव, विकास और रूप – डॉ हरदेव बाहरी
6. हिंदी और भारतीय भाषाएँ – सं. भोलानाथ तिवारी
7. पुरानी हिंदी – चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी'
8. हिंदी की उप भाषाएँ और ध्वनियाँ – रामचंद्र मिश्र
9. भारतीय आर्य भाषा और हिंदी – सुनीतिकुमार चटर्जी
10. नागरी लिपि – गौरीशंकर हिराचंद ओझा
11. भारतीय लिपियों की कहानी – गुणाकर मुले
12. प्रयोजनमूलक हिंदी – विनोद गोदरे
13. राजभाषा हिंदी – कैलाशचंद्र भाटिया

MHI3T02 पाश्चात्य काव्यशास्त्र

उद्देश्य

- रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोधन के लिए काव्यशास्त्र का ज्ञान अपरिहार्य है। इसके आधार पर साहित्य दृष्टि विकसित करना है।
- साहित्य के मूल्य और महत्व का बोध, उसकी विश्लेषण-विवेचन क्षमता को विकसित कराना है।
- रचना के आस्वाद की प्रक्रिया का बोध काव्यशास्त्रीय चिंतन प्रणालियों और काव्यशास्त्रियों की चिंतन-दृष्टि को समझाना है।

इकाई – 1

प्लेटो – काव्य सिद्धांत

अरस्तु – अनुकरण का सिद्धांत, त्रासदी – विरेचन

लोंजाइनस – उद्दात्त की अवधारणा

इकाई – 2

क्रोचे – अभिव्यंजना

विलियम वर्ड्सवर्थ – काव्य भाषा सिद्धांत

कॉलरिज – कल्पना सिद्धांत

इकाई – 3

मैथ्यू अर्नाल्ड – आलोचना का स्वरूप

टी. एस. इलियट – परंपरा की परिकल्पना, निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ समीकरण

आई. ए. रिचर्डस – संप्रेषण सिद्धांत,व्यावहारिक आलोचना

इकाई – 4

अभिजात्यवाद, स्वछंदतावाद, मार्क्सवाद,आधुनिकतावाद,

उत्तर आधुनिकतावाद, अस्तित्ववाद, मनोविश्लेषणवाद, विखंडनवाद

शैक्षिक परिणाम :-

विद्यार्थियों को विषय की गहन जानकारी प्राप्त होगी।
उनमें विविध वैश्विक सिद्धांतों,अवधारणाओं के प्रति तार्किक दृष्टि विकसित होगी, जिससे उनकी वैज्ञानिक और तुलनात्मक सोच बढ़ेगी।
उनमें नैतिक और सामाजिक भावना का विकास होगा।
उनमें भाषिक सम्प्रेषण की तकनीक की समझ बनेगी। वैश्विक, सामुदायिक सोच विकसित होगी।
• उनकी तार्किक क्षमता समृद्ध होगी। शोध वृत्ति का विकास होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – भगीरथ मिश्र
2. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा
3. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – निर्मला जैन
4. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र- डॉ.गणपतिचन्द्र गुप्त
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र – डॉ.विजयपाल सिंह
6. भारतीय काव्यशास्त्र -प्रो. हरिमोहन
7. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - योगेंद्र प्रताप सिंह
8. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका-मैनेजर पाण्डेय
9. पाश्चात्य साहित्य चिन्तन - निर्मला जैन, कुसुम बाठीयां
10. पाश्चात्य काव्यशास्त्र - तारकनाथ बाली
11. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र - गणपतिचंद्र गुप्त
12. पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत विवेचन –डॉ ओमप्रकाश शर्मा

MHI3T03 (A) अनुसंधान प्रविधि

MHI3T03 (B) आधुनिक काव्य

उद्देश्य

- आधुनिक कवियों के परिचय द्वारा विद्यार्थी की काव्य चेतना तथा काव्य-विश्लेषण के सामर्थ्य का विस्तार करना है।
- विद्यार्थी कविता के साथ कवियों की दार्शनिक दृष्टि और उसकी सामाजिक प्रासंगिकता का बोध कराना।

इकाई 1

आधुनिक कविता का परिचय
आधुनिक कविता की प्रवृत्तियाँ
भारतेंदु युग, द्विवेदी युग
छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता

इकाई 2

भारतेंदु हरिश्चन्द्र – दशरथ विलाप, बसंत
मैथिलीशरण गुप्त – साकेत (नवमसर्ग)
माखनलाल चतुर्वेदी – पुष्प की अभिलाषा
सुभद्राकुमारी चौहान – झाँसी की रानी

इकाई 3

जयशंकर प्रसाद – कामायनी (श्रद्धा सर्ग)
निराला – कुकुरमुत्ता
सुमित्रानंदन पंत – प्रथम रश्मि
महादेवी वर्मा – मैं नीर भरी दुःख की बदली

इकाई 4

रामधारी सिंह दिनकर – उर्वशी (तृतीय अंक)
नागार्जुन – अकाल और उसके बाद
अज्ञेय –असाध्य वीणा
मुक्तिबोध –अँधेरे में

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों में विषय की समग्र समझ विकसित होगी।
- उनमें कविता की विभिन्न प्रवृत्तियों को परखने का दृष्टिकोण विकसित होगा।
- उनमें मानवीय मूल्यों के प्रति लगाव तथा विविध संस्कृतियों के प्रति समझ का विकास होगा।

- उनमें भाषिक दक्षता का विकास होगा। काव्यात्मक भाषा की विशेषताओं की समझ विकसित होगी।
- उनमें सामाजिक मुद्दों को विश्लेषित करने की दृष्टि विकसित होगी।

संदर्भ ग्रंथ –

1. हिंदी साहित्य का इतिहास – सं. नगेंद्र,
2. हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास – बच्चन सिंह
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह
4. अज्ञेय प्रतिनिधि कविताएँ एवं जीवन परिचय – सं. विद्यानिवास मिश्र
5. कामायनी – जयशंकर प्रसाद
6. उर्वशी – रामधारी सिंह दिनकर
7. संचयन- जयशंकर प्रसाद – सं. उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन दिल्ली
8. नागार्जुन संचयन –
9. मुक्तिबोध – ज्ञान और संवेदना – नंदकिशोर नवल
10. रागविराग – सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सं. रामविलास शर्मा, लोकभारती प्रकाशन
11. तारापथ – सुमित्रानंदन पन्त
12. यामा – महादेवी वर्मा
13. महादेवी साहित्य समग्र - निर्मला जैन
14. छायावाद – नामवर सिंह
15. आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियां – नामवर सिंह
16. कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह
17. संसद से सड़क तक – धूमिल
18. आधुनिक हिंदी कविता – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
19. समकालीन कविता का समीकरण – प्रमोद शर्मा

MHI3T04 (B) तुलनात्मक साहित्य

उद्देश्य

- तुलनात्मक अध्ययन बहु-सांस्कृतिक विशिष्टताओं से परिचित करना है।
- इससे विद्यार्थी में तुलना का महत्व विकसित हो सकता है। साथ ही भिन्न संस्कृतियों, परम्पराओं, भाषाओं की समझ विकसित हो सकती है।
- इस प्रश्नपत्र के अंतर्गत तुलनात्मक अध्ययन की प्रक्रिया, क्षेत्र, महत्व के साथ कृतियों की तुलना द्वारा उनका प्रायोगिक अध्ययन कराना अभिप्रेत है।

इकाई – 1

तुलनात्मक साहित्य : अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

क्षेत्र और महत्त्व

तुलनात्मक साहित्य के विविध संप्रदाय

इकाई – 2

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की परंपरा, इतिहास और संस्कृति

तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन की प्रविधि

इकाई – 3

तुलनात्मक साहित्य अध्ययन के आधार

प्रवृत्तियां और आंदोलन

प्रेरणा प्रभाव और अभिग्रहण

विचारधारा

इकाई – 4

रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन

काव्य मीमांसा

मुक्तिबोध	- हिंदी -	भूल गलती
नारायण सुर्वे	- मराठी -	कार्ल मार्क्स

कथा मीमांसा

'उसने कहा था' - चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' एवं 'गुंडा'- जयशंकर प्रसाद (हिन्दी)

'अंधड़'-ओमप्रकाश वाल्मीकि एवं 'जेव्हा मी जात चोरली'-बाबूराव बागुल (मराठी कहानी)

'खातीन बाबू'-अज्ञेय एवं 'जिंदगी और जोंक' - अमरकांत (हिंदी)

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों को विषय का विस्तृत बोध होगा।
- उन्हें विभिन्न सांस्कृतिक विशिष्टताओं का बोध होगा।
- उनकी विश्लेषण क्षमता विकसित होगी।
- उनमें संप्रेषणीयता का विकास होगा ।
- उनमें सामाजिक जागरूकता बढ़ेगी। सामूहिक वृत्ति विकसित होगी।
- उनमें सामाजिक वृत्ति का बोध होगा। शोध वृत्ति का विकास होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका – इंद्रनाथ चौधुरी, नैशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
2. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य – इंद्रनाथ चौधुरी
3. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं समस्याएँ – राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन
4. तुलनात्मक साहित्य – सं. नगेंद्र नैशनल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली
5. उसने कहा था - चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी
6. गुंडा - जयशंकर प्रसाद
7. खातीन बाबू - अज्ञेय
8. जिंदगी और जोंक- अमरकांत
9. अंधड़ - ओमप्रकाश वाल्मीकि
10. जेव्हा मी जात चोरली - बाबूराव बागुल

चतुर्थ सेमेस्टर

MHI4T01 भाषा विज्ञान

उद्देश्य

- विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित कराना है।
- विद्यार्थी को हिन्दी भाषा की प्रकृति, संरचना, प्रवृत्ति से अवगत कराना है।
- विद्यार्थी को भाषा का कुशल प्रयोग करवाना।
- भाषा विज्ञान के विविध पक्षों का बोध कराना उद्देश्य है।
- भाषा संरचना के नियमों और सिद्धांतों की समझ इससे विकसित कराना।

इकाई – 1

भाषा की परिभाषा, लक्षण

भाषा व्यवस्था और भाषा व्यवहार

भाषा विज्ञान स्वरूप और व्याप्ति

भाषा विज्ञान की विभिन्न अध्ययन पद्धतियाँ

इकाई – 2

स्वन विज्ञान – वाग्वयव और उसके कार्य, स्वन की अवधारणा, स्वन का वर्गीकरण

स्वन गुण, स्वनिक परिवर्तन, स्वनिम की अवधारणा, स्वनिम के भेद

इकाई – 3

रूप विज्ञान – रूप प्रक्रिया का स्वरुप और शाखाएँ

रूपिम की अवधारणा, रूपिम के भेद, अभिहितान्वयवाद, अन्विताभिदानवाद

वाक्य विज्ञान – वाक्य की अवधारणा, तत्त्व, भेद, वाक्य के अंग, वाक्य परिवर्तन की दिशाएँ

इकाई – 4

अर्थ विज्ञान – अर्थ की अवधारणा, शब्द और अर्थ का संबंध,

पर्यायता, विलोमता और अनेकार्थता, अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ और कारण

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों को विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।

- उनमें भाषा के विभिन्न पक्षों के अध्ययन से भाषा प्रयोग में दक्षता आएगी,सम्प्रेषण कौशल विकसित होगा।
- उनमें वैज्ञानिक आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- उनमें विषय संबंधी रोजगारोन्मुखता बढ़ेगी।
- उनमें सम्प्रेषण कौशल के विकास से समूह भावना विकसित होगी।
- शोध वृत्ति का विकास होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

1. सामान्य भाषा विज्ञान –बाबूराम सक्सेना
2. आधुनिक भाषा विज्ञान –भोलानाथ तिवारी
3. भाषा और भाषिकी–देवीशंकर द्विवेदी
4. भाषा विज्ञान –भोलानाथ तिवारी
5. भाषा का विकास –धीरेन्द्र वर्मा
6. हिंदी भाषा – हरदेव बाहरी
7. भाषा विज्ञान –रामकिशोर शर्मा
8. हिंदी भाषा का इतिहास –धीरेंद्र वर्मा
9. भाषा शास्त्र की रूपरेखा –उदय नारायण तिवारी
10. भाषा विज्ञान के अधुनातन आयाम एवं हिन्दी भाषा- डॉ अम्बादास देशमुख
11. भाषा विज्ञान के सिद्धांत विवेचन –डॉ ओमप्रकाश शर्मा

MHI4T02 हिंदी आलोचना

उद्देश्य

- हिन्दी साहित्य के अध्ययन के लिए विभिन्न आलोचनात्मक दृष्टियों और प्रवृत्तियों का बोध करवाना अत्यावश्यक है।
- इससे साहित्य सृजन की विविध प्रक्रियाओं को समझना है।
- आलोचकों के दृष्टिकोण को समझते हुए, आलोचना की समूची परंपरा और उसके महत्व का परिचय कराना है।

इकाई – 1

हिंदी आलोचना – अर्थ : स्वरूप, पृष्ठभूमि

हिंदी आलोचना : उद्भव और विकास

इकाई – 2

आलोचना की दृष्टियाँ – मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय, सौंदर्यशास्त्रीय, तुलनात्मक, मनोवैज्ञानिक

विमर्शात्मक दृष्टिकोण – दलित स्त्री और आदिवासी

इकाई – 3

प्रमुख आलोचक –

रामचंद्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी,

नंददुलारे वाजपेयी, रामविलास शर्मा, नगेंद्र, नामवर सिंह

इकाई – 4

प्रमुख रचनाकार आलोचक –

निराला, विजयदेव नारायण साही,

मुक्तिबोध, अशोक वाजपेयी, रमेशचंद्र शाह, अरुण कमल

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों को हिन्दी आलोचना संबंधी विविध अवधारणाओं, मान्यताओं और प्रवृत्तियों का बोध होगा।
- उनमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- उन्हें विषय को समझने, उसे नये परिप्रेक्ष्य में व्याख्यायित करने की समज विकसित होगी।

- उन्हें साहित्यिक सिद्धांतों के शोध की दिशाएँ प्राप्त होगी। उनकी तर्कक्षमता विकसित होगी।
- उनमें कृतियों, मूल्यों, मान्यताओं को देखने का वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण विकसित होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

1. साहित्यालोचन – श्यामसुंदर दास
2. दूसरी परंपरा की खोज – नामवर सिंह
3. रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना – रामविलास शर्मा
4. हिंदी आलोचना का विकास – मधुरेश
5. इतिहास और आलोचना – नामवर सिंह
6. कविता के नये प्रतिमान – नामवर सिंह
7. आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द – बच्चन सिंह
8. हिंदी आलोचना : बीसवी सदी – निर्मला जैन
9. हिंदी आलोचना – विश्वनाथ त्रिपाठी
10. आलोचना और आलोचना – बच्चन सिंह
11. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका – मैनेजर पाण्डेय
12. हिंदी आलोचना के आधार स्तंभ – खंडेलवाल, गुप्त
13. परंपरा का मूल्यांकन – रामविलास शर्मा
14. साहित्य अध्ययन की दृष्टियाँ – उदयभानु सिंह, हरभजन सिंह, रविंद्रनाथ श्रीवास्तव

MHI4T03(A) जनसंचार और हिन्दी पत्रकारिता

उद्देश्य

- जनसंचार के माध्यमों की जानकारी देना तथा जनसंचार की प्रकृति और प्रणाली को समझाना।
- विद्यार्थी इस प्रश्नपत्र के माध्यम से जनसंचार के विभिन्न क्षेत्रों से अवगत हो सकेंगे।
- सूचना प्रौद्योगिकी के तकनीकी पक्षों, भाषिक पक्षों को समझ सकेंगे।
- हिन्दी माध्यमों की समझ से रोजगार की दृष्टि के अच्छे अवसर प्राप्त कराना।

इकाई–1

जनसंचार–अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप और क्षेत्र

हिन्दी पत्रकारिता उद्भव और विकास

इकाई–2

समाचार लेखन : तत्व, स्त्रोत

समाचार संरचना

फीचर लेखन

संपादन कला

इकाई–3

जनसंचार माध्यम के विविध रूप

परंपराग माध्यम – लोकगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकशिल्प

मुद्रित माध्यम

आकाशवाणी

जनसंचार माध्यमों का दायित्व

जनसंचार माध्यमों का राष्ट्रीय उत्थान में योगदान

इकाई–4

जनसंचार माध्यम और विज्ञापन

विज्ञापन का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

विज्ञापन के प्रकार

विज्ञापन की विशेषताएँ

❖ प्रायोगिक कार्य : शिक्षक द्वारा निर्धारित कौशलपरक/प्रायोगिक कार्य करना होगा।

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों को विषय की विस्तृत जानकारी प्राप्त होगी।
- उनमें सम्प्रेषण कौशल की क्षमता विकसित होगी।
- उनमें आलोचनात्मक दृष्टिकोण का निर्माण होगा। संचार तकनीक का बोध होगा।
- उनमें व्यावसायिक प्रवृत्ति बढ़ेगी, रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे। तकनीकी क्षमता में वृद्धि होगी। शोध वृत्ति का विकास होगा।
- उनमें समूह भावना, सामाजिक जागरूकता, मानवीय मूल्यों की परख तथा तार्किक क्षमता की वृद्धि होगी। नेतृत्व क्षमता का विक

संदर्भ ग्रंथ –

1. हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम - वेदप्रताप वैदिक
2. मीडिया लेखन - सुमित मोहन
3. भारत में संचार और जनसंचार - डॉ.जेवी.विला निलम,अनुवादक डॉ. शशिकांत शुक्ल
4. समाचार संकलन और लेखन - डॉ. नंदकिशोर त्रिखा
5. कम्प्यूटर एक परिचय - सं. संतोष चौबे
6. पटकथा लेखन - मनोहरश्याम जोशी
7. हिंदी पत्रकारिता - कृष्णबिहारी मिश्र
8. प्रयोजनमूलक हिंदी संरचना एवं प्रयोग - डॉ. माधव सोनटक्के
9. मीडिया हूँ मैं - जयप्रकाश त्रिपाठी
10. जनसंचार और पत्रकारिता : विविध आयाम – डॉ ओमप्रकाश शर्मा

MHI4T04 (B) साहित्य और सिनेमा

उद्देश्य

- साहित्य को सिनेमा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना है।
- साहित्यकार और फिल्म की निर्माण प्रक्रिया के अंतर को समझाना।
- रोजगार के अवसर की दृष्टि से इसे एक उद्योग के रूप में महत्त्व प्रतिपादित कराना।
- उनमें समूह-भावना, समस्या-समाधान वृत्ति का विकास कराना।

इकाई–1

साहित्य और सिनेमा का अंत:संबंध
साहित्यिक रचना सिनेमा निर्माण की प्रक्रिया
हिंदी सिनेमा की विकास यात्रा
समकालीन सिनेमा

इकाई–2

माध्यम रूपांतरण : प्रक्रिया और प्रविधि
सैद्धांतिक पहलु
तकनीकी
माध्यम रूपांतरण की चुनौतियाँ

इकाई–3

साहित्यिक कृतियों (कहानियों) पर बनी फ़िल्में
तीसरी कसम,उर्फ़ मारे गये गुलफ़ाम (कहानी) - फणीश्वरनाथ रेणु- तीसरी कसम (फिल्म) - बासु भट्टाचार्य

इकाई–4

साहित्यिक कृतियों (उपन्यासों) पर बनी फ़िल्में
गुनाहों का देवता (उपन्यास)-धर्मवीर भारती- गुनाहों का देवता (फिल्म)-देवी शर्मा
काली आंधी (उपन्यास) कमलेश्वर–आंधी (फिल्म)-गुलजार

शैक्षिक परिणाम :-

- विद्यार्थियों में विषय की गहन समझ विकसित होगी।
- उनमें सम्प्रेषण क्षमता का विकास होगा।

- तार्किक तथा आलोचनात्मक दृष्टिकोण निर्मित होगा।
- समूह-भावना, समस्या-समाधान वृत्ति का विकास होगा। रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।
- सामाजिक जागरूकता, मानवीय मूल्य, शोधवृत्ति तथा नेतृत्व क्षमता का विकास होगा। संचार तकनीक का बोध होगा।

संदर्भ ग्रंथ –

सहायक ग्रंथ:

1) सिनेमा के सौ बरस	सं. मृत्युंजय (शिल्पायन)
2) सिनेमा का समाजशास्त्र	जबरीमल पारख
3) हिंदी सिनेमा का सच	शंभुनाथ
4) हिंदी साहित्य और सिनेमा	विवेक दुबे
5) सिनेमा-नया सिनेमा	ब्रजेश्वर मदान
6) सिनेमा का जादुई सफर	प्रताप सिंह
7) सिनेमा की सोच	ब्रहमात्मज अजय
8) सिनेमाः समकालीन सिनेमा	ब्रहमात्मज अजय
9) सिनेमाई भाषा और हिंदी संवेदना का विश्लेषण	किशोर वासवानी
10) सिनेमा और साहित्य	हरिशकुमार
11) फिल्म पत्रकारिता	विनोद तिवारी
12) सिनेमा समाज साहित्य	हूबनाथ

प्रश्नपत्र का प्रारूप

सभी प्रश्न पत्रों हेतु प्रस्तावित

प्रश्न 1. इकाई एक पर दो दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें से एक का उत्तर लिखना होगा.1×16

प्रश्न 2. इकाई दो पर दो दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें से एक का उत्तर लिखना होगा. 1×16

प्रश्न 3. इकाई तीन पर दो दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें से एक का उत्तर लिखना होगा.1×16

प्रश्न 4. इकाई चार पर दो दीर्घोत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें से एक का उत्तर लिखना होगा.1×16

प्रश्न 5. प्रत्येक इकाइयों पर एक-एक ऐसे कुल चार लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे जिसमें से सभी के उत्तर लिखने होगे. 4×4

- **आंतरिक मूल्यांकन**

1. प्रत्येक पेपर में आन्तरिक मूल्यांकन के अंतर्गत 20 अंक होंगे. (कौशल परक/प्रायोगिक दिया गया कार्य, प्रोजेक्ट रिपोर्ट, इंट्रनशिप, मौखिकी, सेमिनार, टेस्ट, गृह-कार्य, टयूटोरियल, उपस्थिति एवं समग्र व्यवहार के आधार पर होंगे.)
2. परीक्षार्थी को लिखित (Theory) एवं आतंरिक मूल्यांकन दोनों में एकत्रित (Combined) 40 % अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा.
3. प्रत्येक सत्र में शिक्षक के निर्देशानुसार दिया गया कौशलपरक/प्रायोगिक कार्य विद्यार्थियों को पूर्ण करना अनिवार्य होगा.